

रुसी

काव्य-पल्लव



अनु: कृष्णप्रकाश श्रेष्ठ

ГЛОБАЛЬНАЯ ФЕДЕРАЦИЯ НЕПАЛЬСКОЙ ЛИТЕРАТУРЫ
ВСЕМИРНЫЙ ЦЕНТАЛЬНЫЙ КОМИТЕТ

विश्व नेपाली साहित्य महासङ्घ

विश्व केन्द्रीय समिति



रुसी काव्य-पल्लव

(द्विभाषिक कविता सङ्कलन)

ЛЕПЕСТКИ РУССКОЙ ПОЭЗИИ

(Двуязычный сборник стихов)

Автор перевода с русского языка

Кришна Пракаш ШРЕСТХА

रुसी भाषाबाट नेपालीमा काव्यानुवाद

कृष्णप्रकाश श्रेष्ठ



КЛУБ НЕПАЛИСТИКИ РОССИИ

रुस नेपालविद्या केन्द्र

Москва-Катмандु

2018 г. * 2075 BS

मास्को-काठमाडौं

वि.सं. २०७५ * ई.सं. २०१८

ЛЕПЕСТКИ РУССКОЙ ПОЭЗИИ (Двуязычный сборник русских стихов)

Сборник стихов, изданный Всемирным центральным комитетом Глобальной федерации непальской литературы, содержит 23 стихотворения поэтов: Людмилы Авдеевой, Тамары Потёмкиной, Людмилы Салтыковой, Татьяны Че (Татьяны Чегловой), Игоря Елисеева, Алексея Бандорина, Владимира Бояринова, Ивана Голубничего, Владимира Силкина. Составителем и автором стихотворного перевода с русского языка на непали является Кришна Пракаш Шрестха. Координатором издания является Клуб непалистики России. Предполагается, что непальцы будут иметь некоторое представление о современной русской поэзии, прочтя собранные здесь стихотворения девяти русских поэтов. – 96 с.

ISBN

रूसी काव्य-पल्लव (द्विभाषिक कविता सङ्कलन)

मूल रूसी कविताका रचयिताहरू : ल्युदमिला आभ्देएभा, इगोर एलिसेएभ, इभान गोलुबिन्ची, तामारा पौत्योम्किना, अलेक्सेइ बान्दोरिन, भ्लादिमिर बोयारिनोभ, ल्युदमिला साल्तिकोभा, भ्लादिमिर सिल्किन, ताच्याना चग्लोभा ।

सङ्कलन र रूसी भाषाबाट नेपालीमा श्लोकवद्ध अनुवादकर्ता : कृष्णप्रकाश श्रेष्ठ ।

निर्णैतावृन्द : विश्वासदीप तिगोला, सुरेन्द्र लिम्बू परदेशी, डा. लेखनाथ काफ्ले,
सावित्रा लुईटेल घिमिरे, केदार सुनुवार संकेत ।

सम्पादन : तेजप्रकाश श्रेष्ठ (नेपाली भाषा) र अलेक्सेइ बान्दोरिन (रूसी भाषा) ।

प्रकाशक : विश्व नेपाली साहित्य महासंघ विश्व केन्द्रीय समिति ।

संयोजक : विश्व नेपाली साहित्य महासंघ रूस शाखा र रूस नेपालविद्या केन्द्र ।

संस्करण : प्रथम, वि.सं. २०७५ (ई.सं. २०१८) ।

आवरण/आकृतिविन्यास: रमेश दाहाल, काठमाडौं, इमेल: ramesh.dahal2074@gmail.com

कम्प्युटर: प्रमिला प्रधान र समन श्रेष्ठ ।

मुद्रक : लुष प्रेस, नयाँ बानेश्वर, काठमाडौं

- © Авторы стихов на русском языке: Людмила Авдеева, Игорь Елисеев, Алексей Бандорин, Владимир Бояринов, Иван Голубничий, Тамара Потёмкина, Людмила Салтыкова, Владимир Силкин, Татьяна Чеглова; 2018 г.
- © Составитель и автор перевода стихов на непали, К.П.Шрестха; 2018 г.
- © Всемирный центральный комитет Глобальной федерации непальской литературы; 2018 г.
- © Клуб непалистики России; 2018 г.

ISBN

PETALS of RUSSIAN POETRY

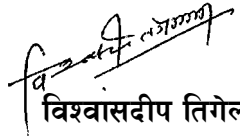
Compiled & Tranalated by

Krishna Prakash Shrestha

शुभकामना !

भाषा र साहित्य मानिसको निमित्त महत्त्वपूर्ण मात्र नभई सबैभन्दा ठूलो अस्त्र हो । साहित्यको प्रभाव र प्रयोगले ठूलूला कामहरू हुने कुरा विश्व इतिहासमा घामजस्तै छर्लङ्ग छ । त्यसैले विश्वभर छरिएका हामी नेपालीहरूको पहिचान र प्रतिष्ठाको निमित्त भाषा र साहित्यले ठूलो अर्थ राख्दछ । त्यसै कारण नेपाली उत्कृष्ट साहित्यलाई अन्य भाषामा अनुवाद गरेर विश्वभर फैलाउने र अन्य भाषाका उत्कृष्ट साहित्य नेपाली साहित्यमा भित्र्याई साहित्यको आदान-प्रदान बढाउने विश्व नेपाली साहित्य महासङ्घको उद्देश्य मध्ये एक रसियन कविहरूको उत्कृष्ट कविताहरूलाई नेपाली भाषामा अनुवाद गरी **रूसी काव्य-पल्लवनामक** कृति प्रकाशन गर्नु आफैँमा ठूलो उपलब्धि हो ।

यस कृतिमा समाविष्ट कविताहरूलाई रसियन भाषाबाट नेपालीमा अनुवाद गरी योगदान गर्नुहुने श्रद्धेय कृष्णप्रकाश श्रेष्ठ लगायत सहयोगी सबैलाई धन्यवाद व्यक्त गर्दै यसअघि नेपाली भाषाका उत्कृष्ट ५१ कविताहरूलाई रसियन भाषामा अनुवाद गरी प्रकाशन भएको **नेपाली कविता कुञ्ज** (सन् २०१७) कृतिभैँ यस कृतिको पनि भव्य सफलताको निमित्त हार्दिक शुभकामना व्यक्त गर्दछु ।


विश्वासदीप तिगोला

अध्यक्ष

विश्व नेपाली साहित्य महासङ्घ, विश्व केन्द्रीय समिति

२० जुलाई २०१८, अक्सफोर्ड युके

प्रकाशकीय

विश्व नेपाली साहित्य महासङ्घको स्थापना सन् २०१० जुलाई १३ का दिन विश्वभरका १८ मुलुकका ४७ म्प्रष्टासर्जकहरूको सहभागिता र समर्थनमा भएको हो । भौतिक तथा प्रविधिको विकास र ठूलो संख्यामा नेपाली पहिचान बोकेकाहरू विश्वभर छरिँदै गएको परिप्रेक्ष्यमा सबैलाई समेटने अपनत्व महशुस हुने गरी यो साभ्का संस्थाको स्थापना भएको हो । नयाँ परिस्थितिमा नयाँ सोच र जोसका साथ असीमित सम्भावनाहरू लिएर यो महासङ्घ स्थापना भएको हो । नेपाली पहिचान बोकेकाले मौलिक रूपबाट बोलिने सबै भाषाका साहित्यलाई समग्रमा नेपाली साहित्य मान्दै र भाषा साहित्यलाई मुलुकको सिमानाले छुटाउन सक्दैन भन्ने मान्यतालाई मुलमन्त्र मानेर यो साहित्य महासङ्घ निरन्तर अधि बढिरहेको छ ।

यस महासङ्घले प्रथम नेपाली साहित्यको विश्व सम्मेलन, विश्वव्यापी कविता तथा गजल प्रतियोगिताहरू सम्पन्न गर्नुको साथै भण्डै ३ दर्जन कृतिहरू र साहित्य संसारनामक ग्रिन्ट र मूलबाटोनामक ई-बुलेटिन प्रकाशन गर्दै आएको छ । यस महासङ्घले म्प्रष्टासर्जकहरूलाई पुरस्कृत तथा सम्मानका साथै विभिन्न च्यारिटीका कामहरू पनि गर्दै आएको छ । विश्वका १७ मुलुकमा स्थापित २५ शाखाहरूले आ-आफ्नो ठाँउबाट नेपाली साहित्यको श्रीबृद्धिको काम गरिरहेका छन् । साहित्य महासङ्घ साहित्यिक संकीर्णताबाट माथि उठेर प्रगतिशील नेपाली साहित्यको लागि जुट्न सबैमा आग्रह गर्दछ । पहिलो विश्व सम्मेलन २५ अक्टोबर २०१३ काठमाडौँले नेपाली साहित्यका राम्रा सिर्जनाहरूलाई अन्य भाषामा अनुवाद गरेर प्रकाशन गर्ने घोषणा गरे बमोजिम श्रद्धेय कृष्णप्रकाश श्रेष्ठज्यूको महत्त्वपूर्ण सहयोग तथा अनुवादनामा ५१ वटा नेपाली समसामयिक कविताहरू समेटिएको नेपाली कविता कुञ्ज (सन् २०१७) कृति रसियन भाषामा प्रकाशन गरी थोरै भए पनि नेपाली सुगन्धलाई रसियाको माटोमा छर्ने जमर्को गरिएको थियो ।

अहिले विश्व नेपाली साहित्य महासङ्घको तत्वावधानमा बेलायतको राजधानीमा सम्पन्न हुन गइरहेको विश्व नेपाली साहित्य सम्मेलनको सन्दर्भमा उक्त कवितासङ्ग्रह लगायत अन्य नेपाली काव्यकृतिहरू पनि रूसी भाषामा अनुवाद गर्न सघाउने रसियाली कवि-कवयित्रीहरूका मूल २३ कविताहरूको सङ्ग्रह र त्यसको नेपालीमा कृष्णप्रकाश श्रेष्ठबाट गरिएको काव्यानुवादसमेत एउटै गाताभिन्न रूसी काव्य-पल्लव शीर्षकमा प्रकाशित गर्ने सम्भावना पाइएको छ । यस्तो द्विभाषिक प्रकाशनबाट नेपाली र रसियनहरू बीचको सम्बन्धमा अभि ऊर्जा थपिनेछ । यो महत्त्वपूर्ण कृतिको प्रकाशनमा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग गर्नुहुने म्प्रष्टासर्जक र अनुवादक लगायत सम्पूर्ण साहित्यिक बन्धुहरूमा विश्व नेपाली साहित्य महासङ्घको तर्फबाट हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन गर्दछु ।

विश्व नेपाली साहित्य महासङ्घ

विश्व केन्द्रीय समिति

मिति : १९ जुलाई २०१८

लण्डन, संयुक्त अधिराज्य ।

ПРЕДИСЛОВИЕ

Накануне Всемирной конференции непальской литературы в Лондоне, который пройдет под эгидой Глобальной федерации непальской литературы, я представляю вам, читатель, новую книгу - двуязычный сборник «Лепестки русской поэзии». В этот небольшой сборник вошли избранные произведения девяти выдающихся поэтов, стихи которых отражают современные тенденции русской поэзии.

Открывают сборник стихотворные произведения, посвященные Великой Отечественной войне (1941-1945 гг.). Эта тема актуальна и сегодня, спустя более 70 лет после ее окончания. В ходе этой жестокой битвы советский народ понёс невосполнимую утрату, героически сражаясь за Родину. У стен московского Кремля расположена могила неизвестного солдата, где круглосуточно горит Вечный огонь, напоминая, что никто не забыт, и ничто не забыто. Сборник открывает стихотворение «У могилы неизвестного солдата». Ежегодно россияне широко отмечают праздник Победы – 9 мая. В этот день по всей России проходит акция памяти - «Бессмертный полк». Именно так называется последнее стихотворение сборника. Тысячи людей с портретами своих родных, павших в боях, идут безмолвным строем, вспоминая героев ...

Я с большим удовольствием представляю российских поэтов, работавших вместе со мною над стихотворным переводом сборников непальских поэтов, в том числе и «Рощица непальской поэзии», изданного на русском языке в 2017 году. Это Людмила Салтыкова, благодаря которой

ранее были опубликованы два сборника: поэзия Бханубхакты Ачарьи («Ради блага людей», 2013) и Лакшми Прасада Девкоты («Золотое утро», 2011), а также Иван Голубничий с поэмой Л.П.Девкоты «Муна и Мадан» (2011). Татьяна Чеглова (Татьяна Че) работала над двуязычным сборником стихов непальского поэта Вишну Бахадура Сингха «Цвет поэзии» (2016). Под редакцией Людмилы Авдеевой вышел мой русский перевод сборника интервью непальского литератора Уттама Кунвара («Творцы и творчество», 2016), таким образом русскоязычные читатели получили возможность познакомиться с творческими мыслями известных непальских писателей XX века. Людмила Авдеева и Владимир Силкин издали сборники своих стихов по непальской тематике - «Страна любви и сказок» (2004) и «Стрела любви» (2010) соответственно, а Игорь Елисеев посвятил сборник своих стихов «Мост Сваргадвари» 200-летнему юбилею непальского поэта Бханубхакты Ачарьи (2014). Кстати, к этой дате в «Непальском доме», расположенном в «ЭТНОМИРе» (Калужская область) был установлен памятник поэту.

Всемирный центральный комитет Глобальной федерации непальской литературы благодарит русских поэтов-переводчиков за участие и бескорыстную помощь в подготовке сборника современных непальских поэтов «Рощица непальской поэзии», изданного на русском языке (2017).

Сегодня я представляю вам новый сборник «Лепестки русской поэзии» и испытываю большую радость от того, что имею возможность познакомить своих соотечественников с творчеством моих русских друзей-поэтов.

Спасибо!

Кришна Пракаш ШРЕСТХА

12 апреля 2018 г.

प्राक्कथन

आधुनिक रूसी काव्यको महासागरमा गोता लगाएर एक अँजुली काव्य उजाउनु असम्भव जमर्को हुनेछ। तैपनि नेपाली पाठकवृन्दलाई यस असीमित महासागरबाट नवरत्न पहिल्याएर २३ स-साना कणहरू बटुली काव्य-पल्लवको बान्की दिई रूसी र नेपाली पाठकवृन्दको करकमलमा पुऱ्याउने धृष्टता गरेको छु।

नेपाली काव्यका केही अमर मणिहरूलाई रूसी पाठकवर्गसमक्ष प्रदर्शन गर्ने क्रममा यहाँ प्रस्तुत रूसी मित्र कवि-कवयित्रीहरूबाट गहकिलो योगदान प्राप्त भएको छ, तर यस निस्वार्थ सहयोगका लागि कृतज्ञता ज्ञापनमै मात्र सीमित रहनुपरेको थियो। विश्व नेपाली साहित्य महासंघ विश्व केन्द्रीय समितिको अग्रसरमा रूसी भाषामा नेपाली कविता सङ्कलन 'नेपाली कविता कुञ्ज' को प्रकाशनमा सहयोग गर्ने रूसी कवि-कवयित्रीहरूप्रति सम्मान प्रदर्शन गर्ने उद्देश्यले उनीहरूका कविताहरूको एक द्विभाषिक कविता सङ्ग्रह प्रकाशन गर्ने जमर्को गरिएको हो। यसमा ९ जना आधुनिक रूसी कविहरूका विभिन्न विषयवस्तुमा आधारित २३ वटा कवितालाई समेटिएको छ।

रूसी जनताले सात दशकभन्दा बढी समय बितिसकेर पनि अद्यापि दोस्रो विश्वयुद्धको विभीषिका बिर्सन सकिरहेका छैनन्। सन् १९४१ को २२ जूनको बिहानै हिटलरी फौजले विश्वासघातपूर्वक तत्कालीन सोभियत संघउपर आक्रमण गरेको थियो र ४ वर्षसम्म दिनरात युद्धमा होमिएर धनजनको अपूरणीय क्षति भोग्नुपरेको थियो। सन् १९४५ को ९ मेईका दिन फशीवादी जर्मनीले आत्मसमर्पण गरेको सम्भनामा हरेक वर्ष रूसमा भव्यताका साथ विजय दिवस मनाइन्छ र पिछ्ल्ला वर्षहरूमा त्यस दिन जनजुलुशमा भाग लिनेहरूले युद्धको मारमा परी दिवंगत आफन्तहरूको फोटो बोकेका हुन्छन्। यस अभियानले 'अजम्बरी पल्टन' भन्ने नाउँ पाएको छ। यसै शीर्षकको कविताद्वारा यस सङ्कलनको समापन गरिएको छ।

गतः विश्वयुद्धको स्मरण गराउने कविताहरूद्वारा नै प्रस्तुत सङ्कलनको प्रारम्भ गरिएको छ र एउटा कवितामा मास्को क्रेमलिनको पर्खालमुनि स्थापित अज्ञात सैनिकको चिहानको चर्चा गरिएको छ। त्यहाँ लहरै सोभियत संघका वीर नगरहरूबाट ल्याइएको माटोसहितका मण्डपहरू रहेका छन् र अहोरात्र अखण्ड ज्योति बलिरहेको हुन्छ।

सोभियत सङ्घले जनताको अथक परिश्रमको परिणामस्वरूप युद्धद्वारा ध्वस्त अर्थतन्त्रको पुनर्निर्माण मात्र गरेको नभई अन्तरिक्ष युगको समेत आरम्भ गरेर कीर्तिमान स्थापित गरेको थियो। यहाँ सङ्कलित कलिपय कविताहरूमा शान्तिपूर्ण श्रमको चाहना मुखरित भएको पाइनु कुनै अस्वाभाविकता होइन। कतिपय कविताहरूमा प्रकृतिको चित्रण पाइन्छ भने कतिपय कविता दार्शनिक पाराका छन्। यस सङ्कलनमा समाविष्ट कविताहरूमा रूसको वर्तमान जनजीवनको प्रतिबिम्ब उत्रेको छ भन्दा अत्युक्ति हुनै छैन।

रियाजान नगरकी कवयित्री ल्युदमिला साल्तिकोभाको सहयोगबाट हाम्रा आदिकवि भानुभक्त आचार्यका फुटकर कविताहरू तथा काव्यहरूले 'लोकको गरूँ हित् भनी' (सन् २०१३) र महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाका बालकविताहरूले 'सुनको बिहान' (सन् २०११) भन्ने नामबाट दुई सँगालोको रूपमा एवं मास्कोका कवि इभान गोलुबिन्चीको मद्दतबाट 'मुनामदन' (सन् २०११) खण्डकाव्यले समेत रूसी भाषामा पुनर्जन्म पाएका थिए। रूसी भाषामा नेपाली साहित्यकार उत्तम कुँवरका कतिपय अन्तरवार्ताहरूको संग्रह 'स्रष्टा र साहित्य' (सन् २०१६) को सम्पादनमा सहयोग गर्ने कवयित्री ल्युदमिला आभमेएभाबाट नेपालको विषयवस्तुमा आधारित कवितासंग्रह 'स्नेह र किम्बदन्तीको देश' (सन् २००४) प्रकाशित गरिनुका साथै आदिकवि भानुभक्त आचार्यप्रति समर्पित काव्यकृतिको नै रचना गरिएको थियो भने रूसको दीक्षिणी भेकमा पर्ने दोनवर्ती रोस्तोभ नगरनिवासी इगोर एलिसेएभबाट द्विभाषिक कवितासंग्रह 'स्वर्गद्वारीको पुल' (सन् २०१४) रूसमा हाम्रा आदिकविको द्विशतवार्षिक समारोहप्रति समर्पित गरिएको थियो। नेपाल विषयक कविता संग्रह 'कामवाण' (सन् २०१०) को प्रकाशन गर्ने भ्लादिमिर सिल्किनका साथै नेपाली कवि विष्णुबहादुर सिंहको द्विभाषिक कवितासंग्रह 'कविताको रङ' (सन् २०१६) को श्लोकानुवादकर्ता ताच्याना चेग्लोभा (साहित्यिक उपनाम ताच्याना चे) प्रभृति यस सङ्कलनमा समाविष्ट ९ जना रूसी कवि-कवयित्रीहरूको सहयोगबाट रूसी भाषामा केही नेपाली काव्यकृतिहरूको अनुवाद प्रस्तुत गर्न सफल भएको छु र आफ्ना सहयोगी रूसी मित्रहरूलाई 'नवरत्न' भन्ने विशेषणद्वारा विभूषित गर्ने धृष्टता गरेको छु।

नेपाली काव्यलाई रूसी भाषामा पुनर्जीवन दिने वर्तमान रूसमा कवि-कवयित्रीहरूको केही कृतिबाट नेपाली पाठकवृन्दलाई रसास्वादन गराउने अवसर पाइएकोमा एक अनुवादकको नाताले मलाई अपार हर्षको अनुभव भइरहको छ। अनुवादको गुणस्तर को पारख स्वयं पाठकवृन्दबाट हुने छ भन्ने आशा राखेको छु।

धन्यवाद !

कृष्णप्रकाश श्रेष्ठ

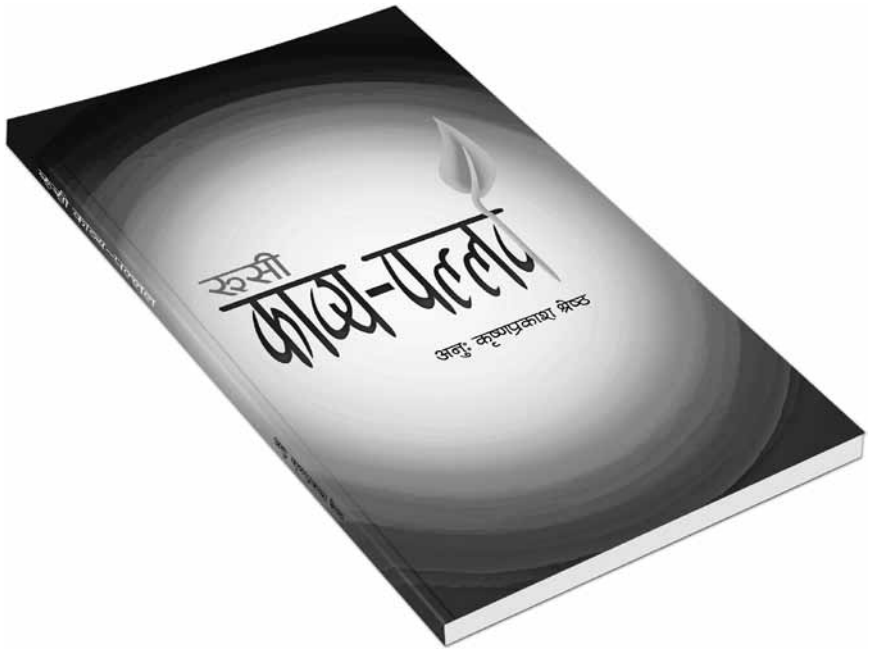
nepalvidhya@mail.ru

СОДЕРЖАНИЕ

विषयसूची

У МОГИЛЫ НЕИЗВЕСТНОГО СОЛДАТА अज्ञात सैनिकको समाधिनेर	12-१३
ВСЕМ ПАВШИМ – ПАМЯТЬ! वीरहरूको स्मृतिमा	14-१५
ТРАВЕ ЗАБВЕНИЯ НЕ РАСТИ विस्मृतिको भ्रार दिन्नौं उम्रन	16-१७
ЧАСЫ घडी	18-१९
В ГОРАХ पहाडमा	20-२१
ДОРОГИ बाटोघाटो	22-२३
УТРО बिहानपख	24-२५
ВЕСЕННЯЯ БАБОЧКА* वसन्तकी पुतली	26-२७
ЖУРАВЛИ УЛЕТЕЛИ कन्याङ्कुरुडहरू उडे	28-२९
РАЙСКИЕ ВРАТА स्वर्गको द्वार	30-३१
ДОМ ПОМНИТ ВСЁ सम्भना घरलाई छ	32-३३
ДВЕ ФОТОГРАФИИ दुई तस्वीर	34-३५
АНГЕЛ देवदूत	36-३७
ПРОСТИ क्षमा गर !	40-४१

МОЙ ВАЛЬС मेरो वाल्सनाच	42-४३
В ДВИЖЕНИИ Я СУЩЕСТВУЮ गतिमा मात्र बाँच्छु म	46-४७
ПОДСОЛНУХИ सूर्यमुखीहरू	48-४९
БОГУ БОГОВО ईश्वरीय पद्धति	52-५३
ОДИНОЧЕСТВО एकलोपन	54-५५
В ПОСОЛЬСТВЕ НЕПАЛА नेपाली राजदूतावासमा	56-५७
РОССИЙСКИЙ ТРИКОЛОР रूसी तिरङ्गा भण्डा	60-६१
ВОСПОМИНАНИЕ सम्झना	62-६३
БЕССМЕРТНЫЙ ПОЛК अजम्बरी पलटन	64-६५



Людмила АВДЕЕВА

Член Союза писателей России, Международной федерации журналистов, автор более 40 книг, лауреат Международных фестивалей и конкурсов, обладатель литературных премий, медалей, почетных дипломов и других отечественных и зарубежных знаков отличия.

У МОГИЛЫ НЕИЗВЕСТНОГО СОЛДАТА

Расступитесь немного, люди, расступитесь
Перед бывшим солдатом, чей китель
Ордена украшают и светятся солнцем медали.
Это он по гранитным ступеням стучит костылями.

Расступитесь. Сюда не цветы он принес, а память.
Взгляните, взгляните на эту могилу его глазами.
Этот вечный огонь для него сейчас – пламя,
Пламя боя того, на котором он ногу оставил.

Пламя боя того, где друзья на руках у него умирали.
Пламя боя того, где о жизни своей забывали.
В его раненом теле от этого боя остались
Осколки снарядов на вечную горькую память.

Они ему спать не дают. Они его мучат ночами.
Сюда не цветы он принес – свою неуснувшую память.

/Людмила Авдеева. Не разлучай людей, война (поэтическая трилогия).
Книга первая. Изд. «Гуманитарий», Москва, 2001. с. 7/.



अज्ञात सैनिकको समाधिनेर

बाटो क्यै छोडिद्यौ, भाइ, पन्छिद्यौ अलि पल्लिर !
पूर्वसैनिकको सामु नुही भुकाइद्यौ शिर !!
तक्मा चम्कन्छ छातीमा प्रकाश सूर्यको परी ।
दुङ्गाको सिंढीमा उस्कै बैसाखी ठोक्छ बेसरी ॥

स्मृतिश्रद्धाञ्जलि हो त्यो लिएको पुष्प हातमा ।
उस्कै दृष्टि लिई पैचो तिमी हेर समाधिमा !!
अखण्ड ज्योति दन्केको ज्वालातुल्य छ उस्कन ।
युद्धाग्निमा गच्यो उस्ले गोडा नै निज अर्पण ॥

युद्धाग्नि त्यै जहाँ उस्का साथीको आहुति भयो ।
युद्धाग्नि त्यै जहाँ वास्ता न ता जीवनकै लियो ॥
फुटेको बमको टुक्रा घाइते देहमा रह्यो ।
चिन्ह युद्धाग्निको त्यो नै तीतो स्मृतिसरी भयो ॥

रातमा जागछ पीडा त्यो, दिन्न त्यस्ले निदाउन ।
साँचेको स्मृतिको पुष्प ल्यायो उस्ले चढाउन ॥

(ल्युदमिला आभ्देयेभा, युद्ध, नपार् वियोग मान्छेमा (ने राज्लुचाइ प्युदे
इ, भाइना), मास्को, ई.सं. २००१, पृ. ७० ।
अनु. ११ डिसेम्बर, २००४, शनिवार



ВСЕМ ПАВШИМ – ПАМЯТЬ!

Еще мы не всех мертвых схоронили.
Еще не всем святой поставлен крест.
Отцов и дедов ждут во снах и ныне.
И ныне снятся Сталинград и Брест.

И где-то есть заржавленные пушки,
Что помнят бой и раненых в пыли.
И где-то доживает век старушка,
Девчонкой, не узнавшая любви.

Ее любимый пал на поле брани
В том роковом сороковом году.
В какой семье, скажи, не проклинали
Ту страшную Великую войну.

В какой семье не плакали от счастья,
Когда пришел Великий день Побед.
И обнимались люди, словно братья,
И верили, что Мир теперь навек!

/Людмила Авдеева. Не разлучай людей, война (поэтическая трилогия).
Книга первая. Изд. «Гуманитарий», Москва, 2001. с.
47/.



वीरहरूको स्मृतिमा

समाधिस्थ हुनै बाँकी कैयौं छन् अभ्र मृतक,
पवित्र क्रसको चिन्ह राखिएन अभ्रैतक ।
प्रतीक्षा बाबुबाजेको अभ्रै गरिन्छ स्वप्नमा,
स्टालिनग्राद^१ औ ब्रेस्ट^२ भुल्किन्छन् अभ्र स्मृतिमा ॥

अभ्रै होलान् कतै बाँकी खियाले ग्रस्त तोप ती,
जस्लाई सम्भरना होला युद्धका घाइते जति ।
अभ्रै होलान् कति वृद्धा काल पर्खेर जीवित,
रहे यौवनदेखि जो प्रेमको स्वाद वंचित ॥

पायो वीरगति उसको प्रेमीले रणक्षेत्रमा,
एकचालीसको^३ क्रूर चम्केको युद्ध सालमा ।
होला क्रूर महायुद्धलाई क्वै परिवार नै
धारे हात लगाएर नसराप्ने यहाँ कुनै ?!

महादिवस आएथ्यो जब विजयको यहाँ,
परिवार छ के त्यस्तो नरुने हर्षले यहाँ ?
दाजुभाइसरी मान्छे बाँधिई अडकमालमा,
विश्वास पोख्थे : शान्ति छाउला अब विश्वमा !!

अनु. १२ डिसेम्बर २००४, आइतवार

(त्युदामिला आभ्देयेभा, युद्ध, नपाए वियोग मान्छेमा (ने राज्लुचाइ प्युदेइ, भाइना),

मास्को, ई.सं. २००१, पृ. ४७० ।

-
- १ स्टालिनग्राद - भोल्गा तटवर्ती नगर जो हाल भोल्गोग्राद भनिन्छ । दोस्रो विश्वयुद्धको क्रममा यहाँ सबभन्दा भीषण संग्राम भएको थियो र जनरलसहित हिटलरी फौजको विशाल डफ्फा सोभियत सेनाको धेरामा परी आत्मसमर्पण गर्न सिववश भएको थियो ।
- २ ब्रेष्ट - सोभियत संघको पश्चिमी सीमावर्ती दुर्गनगर (हाल देलारुस गणतन्त्र अन्तर्गत छ) । यसै दुर्गनगरमा सन् १९४१ को २२ जुनको एकाबिहानै शस्त्रसज्जित हिटलरी फौजले सर्वप्रथम विश्वासघातपूर्वक हमला गरेको थियो तर दूररक्षकहरूले डटेर शत्रुको सामना गरेका थिए ।
- ३ एकचालीसको - सन् १९४१ को २२ जुनका दिन बिहानै हिटलरी जर्मनीको क्रूरतापूर्ण आक्रमकविरुद्ध सोभियत जनताको महान् देशभक्तिपूर्ण युद्ध (सन् १९४१-१९४५) चम्केको थियो ।



ТРАВЕ ЗАБВЕНИЯ НЕ РАСТИ

Не допустим, чтоб травой забвенья
Заросли дороги тяжких войн.
Есть еще суровые мгновенья,
Когда нужен Родине герой.

И пускай заметно поредела
Ветеранов боевая рать.
Правнуки и внуки знают дело
И умеют птицами летать.

Деды падали в боях под Керчью.
Севастополь, Сталинград отцы прошли.
Внук в Афгане встретился со смертью.
Правнуки узнали боль Чечни.

Но не зарастет трава забвенья.
Наша память, бей в колокола.
Русская отвага и терпенье
Живы – значит, Родина жива.

/Людмила Авдеева. Не разлучай людей, война (поэтическая трилогия).
Книга первая. Изд. «Гуманитарий», Москва, 2001. с.
47/.



विस्मृतिको भार दिन्नौ उम्रन

दिन्नौ उम्रन नै हामी भार विस्मृतिको त्यहाँ,
कठोर युद्धको बाटो गुज्रिएको थियो जहाँ ।
क्षणहरू अभै क्रूर छँदैछन् ती अवाँछित,
पर्नेछ मातृभूलाई वीरताको जरुरत ॥

घट्दो छ पूर्वयोद्धाको पंक्ति ऐले प्रतिक्षण,
वीरताको गर्यो जस्ले सङ्ग्राममा प्रदर्शन ।
नातिपनातिले तिन्कै आज दायित्व बुझ्दछन्,
फिँजाई पङ्ख पन्छीभैँ उड्ने सामर्थ्य राख्दछन् ॥

केर्चीको युद्धमा बाजेहरू वीर बनी ढले,
पाई वीरगाँत बाबु सेभास्तोपोल^१मा मरे ।
कालसंग भयो भेट नातिको अफगानमा,
देख्यो पनातिले मृत्यु चेच्या^२को रणक्षेत्रमा ॥

किन्तु विस्मृतिको भार दिन्नौ उम्रन क्यै गरी,
ठोक्नेछ स्मृतिले हाम्रो सदैव घण्ट बेसरी ।
अस्तित्वमा रहेसम्म रूसी धैर्य र वीरता,
जीवन्त रहला मातृभूमिको पनि अस्मिता ॥

अनु. १२ डिसेम्बर २००४, आइतवार
(ल्युदमिला आभ्देयेभा, युद्ध, नपार वियोग मान्छेमा (ने राज्लुचाइ प्युदेइ, भाइता),
मास्को, ई.सं. २००१, पृ. ४७) ।

१ केर्च - क्रिमियाको पूर्वी तटमा अवस्थित नगर ।

२ सेभास्तोपोल - क्रिमियाको नगर । हाल यो रूस महासंघका ८५ संघटक प्रदेशमध्ये एक बनेको छ ।

३ चेच्या - रूस महासंघअन्तर्गतका ८५ संघटक प्रदेशमध्ये ककेशिया क्षेत्रमा अवस्थित एक गणतन्त्र ।



Игорь ЕЛИСЕЕВ

Член Союза писателей России, Союза писателей Москвы, Международного союза писателей и журналистов АРІА (Лондон, член-корреспондент Петровской академии наук и искусств, главный редактор международного литературно-художественного альманаха “Рукопись”

ЧАСЫ

В этой комнате столько уюта!
Здесь, в покое, где мысли чисты,
незаметно проходят минуты'
Но внезапно ударят часы

Мир откроет тяжёлые шторы,
сложит мягкое кресло-кровать.
И от стрелок таинственных взора
ты не в силах уже оторвать.

И разносятся гулко удары,
погружаясь в глубины души.
Ты ещё не такой уж и старый,
может, всё впереди, но – спеши,

сбрось дремоты и сытости путы
и от мелочных дел отрешись.
Незаметно проходят минуты,
но за ними скрывается жизнь.



घडी

सुविधा टन्न छ यस कोठामा,
शान्ति छ, चिन्तन फुर्दछ मनमा ।
सुटुक्क बित्छन् पल अनगन्ती...
किन्तु अचानक बज्दछ घन्टी !!

खुल्दछ पर्दा विश्व उदाई,
राख्दछु सोफा-पलड मिलार्ई ।
गूढ घडीको सुई विचित्र :
टाँसिन पुग्दछ त्यसमै नेत्र ॥

गुँज्छ घडीको सबतिर 'टड्कटड',
अन्तर मनमा फुर्दछ चिन्तन ।
अभैँ बृद्धता तिमिमा छैन,
किन्तु बिलम्ब त गर्नु हुँदैन ॥

स्वार्थ र तन्द्रा त्याग तुरुन्त,
छुद्र भमेलाको गर अन्त्य !
थाहै नदिई बित्छ सबै क्षण,
परन्तु त्यसमै नीहित जीवन ॥

अनु. ०५.०२.२०१८ (सोमवार)



В ГОРАХ

То ли рай здесь, то ли ад,
мысли бродят наугад
и срываются, как будто камни с кручи.
Не могу никак понять:
то ли жить, то ль помирать,
то ли солнце мне по нраву, то ли тучи.

Щурю глаз и хмурю бровь:
это злость или любовь —
напрягаясь что есть сил,
стремиться к цели,
проливая кровь и пот,
достигать своих высот
и держаться там, над бездной,
на пределе?

Отдышусь и вновь пойду,
эту горную грядку
и другие вслед за нею одолею.
Потому что никогда
не давалось без труда
то, что жизнью называется моею.



पहाडमा

यहाँ नै हो कि त्यो स्वर्ग अथवा नर्क हो यही ?
अन्यौलमा परी सोच्दा होला अन्दाज के सही ?!
भीरबाट गुडी भर्ने ढुङ्गाको पहिरो सरी,
अकमक्क परी बुझ्न सक्तिनँ म कसै गरी :
जिउनु हो कि मर्नु हो मेरो प्रारब्धको फल ?
मेरो हो चाहना घाम अथवा हो कि बादल ?!

तन्कियो आँखीभौं, चिम्सो पारियो नेत्र-मण्डल :
हो यो विद्वेशको चिन्ह वा हो प्रेम सुकोमल ?
एकत्रित गरी आफ्नो भए जति सबै बल
प्रयास गर्नु नै पर्छ उद्देश्य पूर्ति खातिर ॥
रक्त औ पसीना धेरै बगाईकन आखिर
यहाँ भेट्टाउनै पर्छ आफ्नो अत्युच्च शिखर ।
अनि त्यहाँ, जहाँबाट देखिन्न पीध नै तल
अडिग भै सकेसम्म रोकिनै पर्छ निश्चल ॥

सासकै साथ तानेर आँट सार्दछु पाइला,
अवश्यै पार गर्नुछ यही पहाडश्रृंखला ।
पहाड अरु गर्नुछ पार त्यस्पाछि भन् कति,
परिश्रमबिना हात लाग्दैन क्यै यहाँ रति !
किनभने यही नै हो मेरा जीवनको गति,
किनभने यही नै हो यहाँ मानव नियति ॥

अनु. ०५.०२.२०१८ (सोमवार)



ДОРОГИ

В лесах российских нет глуши,
и как себя, дружок, ни мучай,
такой же, как твоя, дремучей
не отыскать нигде души.

Я обжигал о холод скал,
о грани их я ранил пальцы,
но след ее мне не попался
и там – и там не отыскал.

Я забирался в глубь земли,
в ее бездушной мгле чернильной
я полз, как будто червь могильный,
чернея в угольной пыли.

Напрасно... Из последних сил,
в какие бы ни лез берлоги,
повсюду видел я дороги,
повсюду к людям выходил.

3.12.1987
Малеевка



बाटोघाटो

एकान्त स्थल नै छैन रूसको वनप्रान्तमा,
मित्र, जतिसुकै चिन्ता गरे तापनि व्यर्थमा !
जस्तो तिम्रो छ त्यस्तो नै अगम्य मन-कानन,
खोजेर पनि सर्वत्र कतै सकिन्न पाउन ॥

चीसो चट्टानमा मैले आगो भोसें सबैतिर,
ढुङ्गामा धसिई औंला रगताम्य भए तर ।
किन्तु त्यहाँ कुनै त्यस्को कतै देखिनँ लक्षण,
धूनचक्कर लाएर चहारें तर भेटिनँ ॥

निकै नै गहराईमा पसें जमीनको मुनि,
कालो मसीसरी त्यस्को निष्प्राण गर्भमा पनि ।
घुम्ने चिहानको मानौं गँडेउलासरी बनी
कोइलाको धूलोभिन्न पसी कालै बनें अनि ॥

सबै व्यर्थ भयो... किन्तु लगाई बल आँखिरी
चहारियो दुलो, प्वाल, छिद्र सारा घुमीवरी ।
मबाट देखिए बाटोघाटो सबै यताउती,
मान्छेहरू पनि भेटें सर्वत्र कति हुन् कति ॥

०३.१२.१९८७

मालेएभ्का

अनु. ११.०२.२०१८ (आइतवार)



Алексей БАНДОРИН

Член Союза писателей России, Российского союза профессиональных литераторов (председатель правления Рязанского союза литераторов, руководитель секции поэзии РСЛ). Председатель жюри Международных литературных конкурсов-фестивалей «Под небом рязанским» и «Зарянка». Член-корреспондент МАИНБ (Международной академии интеграции науки и бизнеса).

УТРО

Я утром снял с души оковы:
Пусть порезвится босиком,
Пускай по лужам мчится снова,
Хрустя дымящимся ледком, –
Не то что полночью, на ощупь,
Лёд разбивая об углы, –
За тот вон дом, за ту вон рощу,
За корабельные стволы.

Во мне душа заговорила,
Я от неё давно отвык –
Такая мощь, такая сила,
Такой божественный язык!
Всё удаётся ей сегодня,
Легко, балуясь, без труда.
Простила мне, что я, негодник,
Ей верным был лишь иногда.



बिहानपख

खोलें बिहान नै मैले आत्माको दृढ बन्धन,
गोडा फुक्का भई आओस् होशमा जडतापन !
दौडोस् न फेरि उन्मुक्त भई विशाल चौरमा,
तुवाँलो भन्कियोस् उड्दै तुसारोग्रस्त घाँसमा ॥
हैन त्यो बरफ फुट्दाको आवाज मध्यरातमा
कुनामा बज्रिई जस्तो सुनिन्छ अनजानमा ।
सल्लाका घारीको पल्लोपट्टि, त्यो घरपल्लिर,
जहाजी घाटका लठ्ठाहरूभन्दा पनि पर ॥

भिन्नको अन्तरात्माले मलाई भन्छ सुस्तरी,
मनको स्वर सुन्ने नै बानी छुटेछ यस्घडी -
कत्तिको शक्तिशाली छ, सशक्त पनि कत्तिको,
आत्मीय दिव्य वाणी यो महत्वपूर्ण कत्तिको !
आज फत्ते सबै गर्छ सहजै ऊ बिनाश्रम,
जे पनि उसका लागि खेलजस्तै मनोरम ।
भए पनि म बेकम्मा, मलाई गर्छ ऊ क्षमा,
आस्था यदाकदा मात्र रहेथ्यो उस्प्रति ममा ॥

अनु. कृष्णप्रकाश श्रेष्ठ
२१ जनवरी २०१२ (शनिवार)



ВЕСЕННЯЯ БАБОЧКА*

Бабочкой весенней
В моё стихотворенье
Ты залетела.
Дразнящая, как горизонт,
села

Невдалеке.
Капелька времени голубела,
Незабудкой цвела
на виске...

О, как грациозно
и обалдело

Ты хорошела
В моей тоске.

(из сб. «Иноходец Пегас», Рязань, Изд-во «Старт»,
с.76)

.....

*Заглавие стихотворения переводчика.



वसन्तकी पुतली

वसन्तकी पुतली अति सानी,
मेरो कविता-पल्लव छानी,
एक्कासी उडिआयौ, प्यारी,
बस्यौ

क्षितीजभैँ भ्रममा पारी ।
त्यहाँ नजिक नै
नीलोपनमा
बिन्दु समयको सानो कणमा ।
नीलपुष्प फुल्यो
कन्चटमा...
अहो ! रमायौ कति
अनि सुखमा,
तिमी मस्कियौ
मेरो दुःखमा ॥

अनु. ९ जनवरी २०१२ (सोमवार)



Владимир БОЯРИНОВ

Председатель Московской городской организации Союза писателей России, автор многочисленных сборников стихов, включая «Журавли улетели» (М., «Новый ключ», 2010).

ЖУРАВЛИ УЛЕТЕЛИ

Пронеслась на заре по грунтовой дороге
Тройка взмыленных в дым ошаленных коней.
На телеге стоял, как на Божьем пороге,
И стегал вороных безутесный Корней.

И кричал он вослед журавлиному клину,
И с отмашкой слезу утирал рукавом:
- Ох, не мину судьбы! Ох, судьбины не мину
На небесном пути, на пути роковом!

Где-то дрогнула ось, где-то брызнула спица,
Повело, подняло, понесло между пней!
И склонилась над ним:
- Чей ты будешь, возница? –
Харкнул кровью в траву безутешный Корней.

И спросили его:
- Ты в уме в самом деле?
И куда понесло тебя с грешной земли?
- Я-то что, я-то что? Журавли улетели!
Без следа улетели мои журавли!
В.Г.Бояринов. Журавли улетели

(Стихотворения). М., Новый ключ, 2010. с. 14.



कन्याङ्कुरुडहरू उडे

गुड्यो भिस्मिसमै एक बगी विकट मार्गमा,
तीन घोडाहरू तान्दै थिए धुलाम्य प्रान्तमा ।
दैवी संघारमा जस्तै उभिई यानको मियो
उत्साहपूर्ण कोर्नेई घोडा दौडाउँदै थियो ॥

बाहुलाले पुछी आँसु भर्की अधीर भैकन
कन्याङ्कुरुडको पंक्ति हेर्दै लाग्यो कराउन ।
अहो, नियति छुट्टै, अहो, छुट्टै, भाग्य नि,
आकाशमार्गमा जस्तै प्रारब्ध पथमा पनि ॥

कतै त्यो थर्कियो चक्का, धुरीको काठ चर्कियो,
ठुटाठुटी छिचोलेर उफ्रियो र थचारियो ।
कसैले निहुरी सोध्यो : कस्को सईस हौ तिमी ?
घाँसमा रक्त छादेर ढोग्यो कोर्नेईले जिमी ॥

तिम्रो मगज सड्क्यो कि ? गुमायौं होश नै कि त ?
पापी भूतलमा बगी बेतोड हाँक्नु हुन्छ त ?
भयो के र मलाई ता ? उडे कन्याङ्कुरुड बरु,
उडे चिनो नछाडेर मेरा कन्याङ्कुरुडहरू ॥

(बोयारिनोभ २०१० : १४)

अनु. ०२.०७.२०१६ (शुक्रवार)

भोरोन्चोभस्की पार्क, मास्को ।



РАЙСКИЕ ВРАТА

Тихо-тихо, как улитка,
В небо выплыла луна.
Тихо скрипнула калитка,
Распахнулся створ окна!

Ветка вздрогнула сторожко
У кленового куста.
Это вовсе не окошко –
Это райские врата!

Ты прости, земля сырая!
Ты прости, родная мать!
Я хочу в пределах рая
Хоть однажды побывать!

На дворе сегодня вёдро,
Там сирень цветёт в саду.
Шасть в окошко! – и на бёдра
Руки жадные кладу.

Ах, какие незабудки
В райском поле щиплет лось!
А под нами третьи сутки
Всё скрипит земная ось!

Ты с окошками, что с края,
Понапрасну не шути, –
До скончанья дней из рая
Нет обратного пути!

В.Г.Бояринов. Журавли улетели

(Стихотворения). М., Новый ключ, 2010. с. 14.



स्वर्गको द्वार

चिप्लेकिराभै अति सुस्त सुस्त
आकाशमा चन्द्र उडान भर्छ ।
चुइँक्क सर्कन्छ कतै तगारो,
खापा खुली भ्याल उदाइग हुन्छ !

एक्कासि हाँगो त भसइग भस्क्यो,
सुन्सानमा मैपलवृक्षनेर ।
यो हैन है भ्याल यहाँ खुलेको,
हो स्वर्ग पस्ने अति भव्य द्वार ॥

तँ माफ गरू, ए धरती भिजेको !
तँ माफ गरू, मातृभू जन्मदात्री !
चहार्न चाहन्छु म स्वर्गभिन्न
बनेर एकै छिन स्वर्गयात्री ॥

घडा छ ऐले घरआँगनैमा,
छ बाटिकामा हँसिना फुलेको ।
पुछु म भ्यालैनिर ! - हात मेरा
हाल्छन् सिधै कम्मरमै अँगालो ॥

अहा ! कति रम्य फुलेर पुष्प
स्वर्गैभरि दिव्य सुवास छर्छ !
परन्तु हाप्रो तल धर्ती नित्य
आफ्नै धुरीमा दिनरात घुम्छ ॥

हेर, छेउको भ्यालसँग त्यो
व्यार्थै ठट्टा गर्नु हुँदैन, -
स्वर्गबाट दिन सारा नबिती
यता फर्कने बाटो छैन !!

(बोयारिनोभ २०१० : १२९)
अनु. २३.१०.२०१७ (सोमवार)



Иван ГОЛУБНИЧИЙ

Главный редактор еженедельника МГО СПР «Московский литератор», автор многочисленных сборников стихов и поэтических переводов, включая стихотворного перевода поэмы непальского поэта Лакшми Прасада Девкоты.

ДОМ ПОМНИТ ВСЁ

Дом помнит всё – метели, холода,
Любовь и смерть, лихие перемены,
Разлуки боль... Всё помнят эти стены.
И я не первый, кто пришёл сюда.

Порой услышу ночью тихий стон,
Невидимого ветра дуновенье.
Неведомой руки прикосновенье
Ко лбу во тьме почувствую сквозь сон.

И думаю: когда-нибудь и я
Приду сюда едва заметной тенью
Бродить в потемках прежнего жилья.

По вечерам. И скажет мать, шутя:
«Тех, кто не спит, уносит привиденье!»
И перекрестит перед сном дитя.

(Голубничий Иван Юрьевич. Стихотворения. М., «МГО СПР», 2000 г., с. 18).



सम्भना घरलाई छ^१

सम्भना घरलाई छ जाडो र हिमआँधीको,
जन्म, मरण औ प्रेम, आमूल हेरफेरको ।
यी भित्ताहरू सम्भन्छन् सारा बिछोडको पिर,
म नै त्यो पहिलो हैन आएथ्यो जो यही घर ॥

रातमा कहिलेकाहीं सुन्दछु मौन क्रन्दन,
अदृश्य श्वास-प्रश्वास, वायुको पनि स्पन्दन ।
अज्ञात हातको स्पर्श निद्रालु यो निधारमा,
भएभै हुन्छ आभास एक्कासी अन्धकारमा ॥

अनि सोच्छु : सके आफै छायासरी कुनै दिन,
आउने छु यहाँ सुट्ट अगोचर बनीकन,
चहार्नेछु कुनाकाप्चा पहिलेको यो निवासमा ।

ठट्टा गर्दै अनि आमा भन्ने छिन् साँभको क्षण,
'ख्याकले लान्छ त्यस्ताई जो चाहन्न निदाउन !'
पुकारा ईशको गर्दै शिशुरक्षार्थ रातमा ॥

(गोलुबिन्ची इभान युर्येभिच, कविताहरू,
मास्को, ई.सं. २०००, पृ. १८)
अनु. २ सेप्टेम्बर २०१० (विहीवार)

१ सेभास्तोपोल - क्रिमियाको नगर । हाल यो रूस महासंघका ८५ संघटक प्रदेशमध्ये एक बनेको छ ।



दुई तस्वीर

यौटा तस्बिरमा घुम्ने सुनौला केशकी ठिठी,
अर्कोमा - बैस नाघेकी नारी गम्भीर छिन् अति ।
दुवैको बीचमा अट्छ भोगेको सब जीवन,
हर्ष-विस्मात कोसेली प्रारब्धले दियो जुन ॥

यौटा तस्बिरमा बाल्यवयको चक्चकेपना,
अर्कोमा - क्षतिको पीडा, पारिवारिक चिन्तना ।
दुवैको बीचमा ज्ञानार्जन, प्रयास, चाहना,
विवाह, शिशुको जन्म, विजयोत्सव, सम्भ्रना ॥

पैलो तस्बिरकी केटी भेट्ने छैन ममा हुती,
अर्को तस्बिरमा मेरी आमाको प्रिय आकृति !!

(पोत्योम्किना २०१६ : १२५)
अनु. १५ जनवरी २०१७ (आइतवार)



АНГЕЛ

Прилетит светлый Ангел в гости,
Скажет: «Я по душу твою».
«Я готова», - отвечу просто,
На дорожку чаю налью.

И, хлебнув ароматного чаю,
Он осмотрит пожитки мои.
«Что-то, - скажет, - я замечаю,
Не богаты заслуги твои».

Да, скопила совсем немножко
Я за длинную жизнь свою,
Вот, беру со стихами лукошко,
Грусть, обиды, печаль мою.

Доброты небольшая коробка –
Всё, что можно уже раздала.
Брать туда с собой дружбу – неловко.
А любовь уж давно умерла.

Да с грехами объёмный мешок
Мне придётся туда с собой взять.
Потому что учили меня
Грязь и мусор не оставлять.



देवदूत

देवदूत उडी आई सामुन्ने पाहुना बनी,
भन्ने छन् : 'लौ, म आएँ नि आत्मा तिम्रो लिनै भनी' ।
'तैयार छु!' - म तत्कालै सहजै दिन्छु उत्तर,
चिया हाल्छु म प्यालामा बाटो लाग्नुअघि तर ॥

चियाको स्वाद चाखेर चस्को लिदै घरिघरि,
मेरो भिँटीमिटी हेर्न दिदै दृष्टि वरिपरि ।
भन्ने छन् : 'खै, यहाँ तिम्रो केही देन म देखिदनेँ,
ज्यादै नगण्य देखिन्छ तिम्रो आर्जनको धन !!'

'हो, कमाई त्यति गर्न सकिएन कुनै यहाँ,
मेरो जीवनको लामो आयु बितेछ व्यर्थमा !
मनको बह, पीडा र दुःखदेन्य सबै कुरो,
यो आफ्नो कविता पोको पारेर लिन्छु पुन्तरो !!

बाँडी दिइसके सारा सकिन्थ्यो दिन जे-जति,
बझ्जमा छ सँगालेको दयामाया अलिकति ।
सकिन्न मित्रता लान लिएर साथमा उता,
मरेर गैसक्यो मेरो उहिल्यै किन्तु प्रेम ता !!

हो मेरो पापको पोको छ ठूलो र गह्रौँ पनि,
उता यो साथमा मैले लानै पर्नेछ तैपनि ।
किन कि हुन्न रे फाल्न धूलोमैलो कसिंंगर,
जे-जस्तो पाइयो शिक्षा गर्नेपछि शिरोपर !!'



Мой крылатый гость загрустит:
«А душа-то твоя больна.
Её надо долго лечить,
Не нужна мне такая она.

Что ж ты душу свою обидела,
Измарала её в золе,
Зря сегодня спешил к тебе, видимо,
Оставайся на грешной Земле».



चिन्ताग्रस्त भए मेरा पखेटादार पाहुना :
'तर आत्मा त तिम्रो छ लागेर रोग - वेदना ।
उपचार निकै लामो नगरी हुन्न त्यस्कन,
तिम्रो अस्वस्थ आत्माको मलाई के प्रयोजन ?!

दुखायौ चित्त आत्माको तिमिले किन यस्तरी ?
शोकसन्तापले गर्दा पूरै खाक हुने गरी ?!
सके आज म आएछु हतारोसाथ व्यर्थमा,
यहीं रहू तिमि फेरि पापमण्डित धर्तीमा !!'

(पोत्योमकिना २०१५ : १४०)

अनुर कृष्णप्रकाश श्रेष्ठ,

दिनाङ्क : ०४.०८.२०१६ (बृहस्पतिवार)



ПРОСТИ

Прости, что посмела возникнуть
В твоей драгоценной судьбе.
Прости, что среди ночи ты вскрикнул,
Когда я приснилась тебе

Прости, что тебя я любила,
Прости, что твоею была,
Прости, что всю душу, мой милый,
Тебе навсегда отдала.

Прости, что пустыми звонками
Тебя отвлекала от дел,
Прости, что взрыв чувств между нами
Принять ты не захотел.

Прости, что слова твои лживы,
Прости, что меня не любил,
Прости, что мечты ещё живы,
Прости, что меня ты забыл.

Прости, что наивные грёзы
Не сбудутся наяву.
Прости мою боль, мои слёзы,
Прости, что на свете живу.



क्षमा गर !

उभिउँ धृष्टतासाथ उत्पन्न भै अगिल्लिर,
तिम्रो अमूल्य प्रारब्धभिन्न घुस्दै, क्षमा गर !
जब म देखिउँ तिम्रो सपनामा भयङ्कर,
करायौँ तर्सिई मध्यरातमा नै, क्षमा गर !

प्रिय, गर्न पुगें प्रेम तिमीलाई, क्षमा गर !
समर्पण गरे आत्मा सम्पूर्ण नै, क्षमा गर !
हे प्यारा ! हुन गो भूल मबाट यत्ति आखिर,
सदाको निमित्त नै आत्मा सुम्पें मैले, क्षमा गर !

हालेर काममा बाधा फोस्रो गन्थन खातिर,
वारम्बार दिउँ घन्टी बिनसितै, क्षमा गर !
मनको आपसी भाव भयो विष्फोट आखिर,
भएन ग्राह्य सो तिम्रो निमित्त अतः क्षमा गर !

तिम्रा बाचाहरू भूठ निस्केकोमा क्षमा गर !
तिम्रो प्रणयको पात्र रहेनछु, क्षमा गर !
भावना त्यो अभै ज्युँदै रहेकोमा क्षमा गर !
तिमीले त मलाई नै बिर्सिन्छौ, क्षमा गर !

स्वस्फूर्त सपना सारा रहेछन् क्षणभङ्गुर,
यथार्थ नहुँदा रै'छन् कल्पना ती, क्षमा गर !
मेरो आँसु र आत्माको पीडा निमित्त क्षमा गर !
मेरो अस्तित्व ज्युँदै छ संसारमा, क्षमा गर !!

अनु. ०७.०८.२०१६ (आइतवार)

भोरोन्चोभस्की पार्क, मास्को ।



Людмила САЛТЫКОВА

Член Союза писателей России, Союза писателей-переводчиков, Российского союза профессиональных литераторов (член Координационного совета, ответственный секретарь Рязанского союза литераторов). Президент Международного литературного конкурса-фестиваля «Под небом рязанским». Член-корреспондент МАИИБ (Международной академии интеграции науки и бизнеса).

МОЙ ВАЛЬС

Этот вальс что-то тронул внутри,
Заиграли там струны, запели.
Раз-два-три, раз-два-три, раз-два-три –
Мы, кружась над землей, полетели.

За плечо обнимаю тебя
И спиной о ладонь опираюсь.
Может, это принцесса-судьба
Наши руки взметнула, как парус?

Не решаюсь в глаза посмотреть.
Мы несёмся, всё выше взлетая.
Ах, щекой бы щеки не задеть –
Так её теплоту ощущаю.

Мчимся мы по волнам среди звёзд.
Наши руки слились у штурвала...
Вдруг, взорвав мир искрящихся грёз,
Вальс растаял, партнёра не стало!

Но в ночи, когда нет ни огня,
Звуки вальса щемящим капризом
Ввысь несли в лёгкой лодке меня,
Овея таинственным бризом.



मेरो वाल्सनाच

मेरो वाल्सले कतै भित्र छोयो,
भयो भन्कृत तार बजेर ।
एक-दुई-तीन, एक-दुई-तीन, एक-दुई-तीन,
हामी नाच्यौं, भूमाथि उडेर ॥

कुममा अङ्गमाल म गर्छु,
पिट्चुमा हात तिम्रो परेर ।
सके हो यो कुमारीको भाग्य,
हाम्रा हात त्रिपाल बनेर ??

नेत्रमा हेर्ने आँट हुँदैन,
हामी पुग्दछौं माथि उडेर ।
अहो, गाला मिल्ने पो हुन् क्यारे -
हुन्छ न्यानो है स्पर्श परेर ॥

छालले लान्छ तारासमीप,
एक भै हाम्रा हात मिलेर...
एक्कासी भयो विष्फोट विश्व,
वालस रुक्यो, प्रिय नै नरहेर !!

परन्तु जब पर्दछ रात,
वालसको धून सुन्छु गमेर ।
हलुका डुङ्गामा म लगिन्छु,
रहस्यमय छाल चलेर ॥



Снова вальс что-то тронул внутри,
Снова каждая струнка там пела:
Раз-два-три, раз-два-три, раз-два-три –
Я к тебе в ритме вальса летела.
Из сборника «Тишина подснежника» (Рязань, 2001)



फेरि वाल्सले कतै भिन्न छोयो,
भयो भन्कृत तार बजेर ।
एक-दुई-तीन, एक-दुई-तीन, एक-दुई-तीन,
म तिमीकहाँ पुन्छु उडेर ॥

(अनु. २२ जनवरी २०११, शनिवार)
(साल्तिकोभा ल्युदामिला, कवितासंग्रह 'हिमसुमनको शान्ति', ज्याजान, सन् २००१)



В ДВИЖЕНИИ Я СУЩЕСТВУЮ

Дорога – волшебное слово.
Поёт и трепещет душа.
Мне в путь бы отправиться снова.
Тропу одолеть и большак.

Пешком, не спеша, иль попуткой,
Иль сесть на автобус-экспресс,
Иль рельсы выслушивать чутко,
На поле смотря и на лес.

В движении я существую.
Покой навевает тоску.
Надеюсь прожить не впустую
На этом недлинном веку.
Из сборника «Время вспять побежало» (Рязань, 2004)



गतिमा मात्र बाँच्छु म

बाटो - क्या छ चमत्कारमयी शब्द मनोरम !
आत्मा गाउँछ, प्रफुल्ल हुन्छु दङ्ग परेर म ॥
सुदूर पथमा हिंड्दै चाहन्छु फेरि लम्कन ।
गरेर पार गोरेटो मूल बाटो समाउन ॥

सुस्तरी पैदलै हिंड्छु, वा गाडीमा सवार भै,
वा चढ्छु द्रुतगामी म एक्सप्रेस बसमाथि नै ॥
अथवा रेलगाडीको सुन्छु आवाज छक्छक ।
खेत वा वन देखिन्छ भ्रूयालबाट अचानक ॥

मेरो अस्तित्वको सूत्र - गतिमा मात्र बाँच्छु म ।
गतिरहितताबाट बन्छु विषादपात्र म ॥
शून्यतामा रही बाँच्ने राखिनै चाहना रति ।
यो छोटो युग टुङ्गिन्छ रोकिनेबित्तिकै गति ॥

(अनु. २२ जनवरी २०११, शनिवार)

(साल्तिकोभा ल्युदमिला, कवितासंग्रह 'समय पछिल्लर दगुच्यो', ज्याजान, सन् २००४)



ПОДСОЛНУХИ

Подсолнушки
под солнышком
качают головой,
подсолнушки
под солнышко
зовут меня с собой
и даже в дни без солнышка
мне дарят свет живой.

Задрал головку рыжую
подсолнух-озорник.
Из глаз смешинки брызжут,
и мне тепло от них.

Подсолнушки
под солнышком
качают головой,
подсолнушки
под солнышко
зовут меня с собой
и даже в дни без солнышка
мне дарят свет живой.

Подсолнечная песенка
однажды родилась,
и к жизни с ней воскресла я
от света и тепла.



सूर्यमुखीहरू

सूर्यमुखीहरू सूर्यकिरणमुनि
फुल्छन् भुल्छन् शिर हल्लाई ।
सूर्यमुखीहरू सूर्यकिरणमुनि
डाँक्छन् आफूतर्फ मलाई ॥
नउदाए पनि सूर्य व्योममा
दिन्छन् जीवन ज्योति मलाई ॥॥

सगर्व ठाडो पार्दछ माथा
सूर्यमुखी नभुकेर रमाई ।
सबतिर छर्दछ हँसिलो आभा,
त्यसले न्यानो दिन्छ मलाई ॥

सूर्यमुखीहरू सूर्यकिरणमुनि
फुल्छन् भुल्छन् शिर हल्लाई ।
सूर्यमुखीहरू सूर्यकिरणमुनि
डाँक्छन् आफूतर्फ मलाई ॥
नउदाए पनि सूर्य व्योममा
दिन्छन् जीवन ज्योति मलाई ॥॥

एकपल्ट जन्मेर अचानक
सूर्यमुखीको लय गुञ्जन्छ ।
ज्योति र न्यानोबाट उसैसँग
जीवन मेरो जागृत हुन्छ ॥



Подсолнушки
под солнышком
качают головой,
подсолнушки
под солнышко
зовут меня с собой
и даже в дни без солнышка
мне дарят свет живой.

Пройдёт-промчится времечко,
головки им склонив,
а людям чудо-семечки
зимой украсят дни.

Подсолнушки
под солнышком
качают головой,
подсолнушки
под солнышко
зовут меня с собой
и даже в дни без солнышка
мне дарят свет живой.

Из сб. «Подсолнухи, или Повороты судьбы» (с.53-54)



सूर्यमुखीहरू सूर्यकिरणमुनि
फुल्छन् भुल्छन् शिर हल्लाई ।
सूर्यमुखीहरू सूर्यकिरणमुनि
डाँक्छन् आफूतर्फ मलाई ॥
नउदाए पनि सूर्य व्योममा
दिन्छन् जीवन ज्योति मलाई ॥॥

नतमस्तक भै उसको सामु
समय दगुर्दै जान्छ हराई ।
चमत्कारमय बियाँ दिन्छ त्यो
हिउँद बिताउन मान्छेलाई ॥

सूर्यमुखीहरू सूर्यकिरणमुनि
फुल्छन् भुल्छन् शिर हल्लाई ।
सूर्यमुखीहरू सूर्यकिरणमुनि
डाँक्छन् आफूतर्फ मलाई ॥
नउदाए पनि सूर्य व्योममा
दिन्छन् जीवन ज्योति मलाई ॥॥

अनु. २१.०१.२०१५ मास्को ।



Владимир СИЛКИН

Лауреат Государственной премии России, Заслуженный работник культуры РФ, Почётный гражданин Рязанской области, начальник военно-художественной студии писателей Центрального Дома Российской Армии МО РФ, полковник

БОГУ БОГОВО

Бог разбудил часа в четыре:
- Смотри как много счастья в мире!
Какой покой и тишина!..
А через миг пришла война.

А Бог всё видел и молчал,
Он всё на свете подмечал.
Он вёл себя, как должно Богу.
Но он не мог остановить
Того, что должно было, быть, -
Не указал бойцу дорогу.

Не крикнул свыше: «Берегись!»
Смотри, вон, со спины заходят!»
Бог дал и вскоре отнял жизнь.
22-го при восходе.
19 декабря 2009



ईश्वरीय पद्धति

ब्युँभाए दैवले चार बजे दिव्य प्रभातमा :
'हेर, क्या सुखसंमृद्धि व्याप्त देखिन्छ विश्वमा !'
जताततै छ सन्नाटा व्याप्त, राज्य छ शान्तिको ।
एक्कासी सुनियो चारैतिर आवाज युद्धको ॥

देखे इश्वरले सारा, तर मौन रहे उनी ।
चियाएर सधैं हेर्ने विश्वको घटना पनि ॥
ईश्वरीय हुनुपर्छ उन्को सम्पूर्ण पद्धति ।
किन्तु हुनेहुनामीको सकेनन् रोक्न नै गति ॥

चम्कँदा युद्ध रोकेनन् दैवले रणको पथ ।
माथिबाट कराएर भनेनन् र 'होऊ संयत !'
पिट्युँमा शत्रुले भ्रम्टी लग्यो चुँडेर जीवन ।
बिहानै गरियो धावा जून बाईसका दिन ॥

१९ डिसेम्बर २००९

(सिल्किन, २०१० : ४८-४९)

अनु. ३.११.२०१०



ОДИНОЧЕСТВО

Жену схоронил и невестку
И с внуком стал век вековать.
Но внуку прислали повестку,
И внуку пришлось воевать.

На счастье надеялся, строил
Беседку в саду и не кис.
Но внук стал посмертно Героем,
И жизнь потеряла свой смысл.

Он ладит у дома качели,
Едва шелохнётся весна...
А вот и грачи прилетели.
Какая быть может война?!
2007



एक्लोपन

गाड्यो चिहानमा पत्नी, बुहारी पनि गाडिई ।
नाति मात्र रहयो बाँकी, हुर्कियो युग नै दिई ॥
पुर्जा सैनिकसेवाको नातिको निमित्त काटियो ।
तसर्थ नातिले चाँडै युद्धमा जानु नै पन्यो ॥

निराश नभई लाग्यो बगैँचामा बनाउन,
आराम धर, आशाले नातिसङ्ग रमाउन ॥
अँगाली मृत्यु नातिको गणना वीरमा भयो ।
किन्तु आखिर के अर्थ एक्लो जीवनको रह्यो ??

वसन्त आउनासाथै हरियाली लिईकन ।
बनाउँथ्यो ऊ भोलुङ्गो सिङ्गारी घर-आँगन ॥
आकाशमा उडी आए पन्छी वसन्तद्योतक ।
सम्भवै कसरी होला चम्कने युद्ध घातक ??

(सिल्किन, २०१० : ५३)

अनु. ४.११.२०१०

सिल्किन, २०१० र सिल्किन भ्लादिमिर, व्यक्तिगत, भाइहो, व्यक्तिगत..
(लिचोए, ब्रात्ची, लिचोए..), (कविता(ग्रन्थ), 'याजान, इ.सं. २०१० ।



В ПОСОЛЬСТВЕ НЕПАЛА

В посольстве Непала - Минаев,
В посольстве Непала - приём.
Приятно, Непал вспоминает,
Тепло вспоминает о нём.

Сегодня - особая дата.
Минаев - учёный и друг.
О том, что он сделал когда-то,
Напомнил сидящим Гурунг.

Посол говорит о хорошем,
О будущем он говорит.
За связь наступившего с прошлым
Огонь нашей дружбы горит.

Такие в посольстве дела, и
Хотелось бы дольше пожить,
Ведь кто-то уже в Гималаи
Дорогу готов проложить.



नेपाली राजदूतावासमा

थिए नेपालको दूतावासमा नै - मिनाएभ,
साढे आठबिसे जन्मजयन्तीको महोत्सव !
समारोह थियो उन्कै सम्भ्रनामा समर्पित,
नेपालीहरूद्वारा भो श्रद्धा-सुमन अर्पित ॥

आजको दिन हो ज्यादै महत्वपूर्णको अनि,
मिनाएभ थिए विद्वान्, मित्र नेपालका भनी ।
सूर्यकिरण गुरुङ्ग त्यहाँ बोल्न अघि सरे,
उन्को कृतित्वको याद र प्रशंसा निकै गरे ॥

बताउँदै थिए राजदूत कार्य अतीतको,
राम्रो चित्र खिंचे उन्ले मैत्रीपूर्ण भविष्यको ।
वर्तमान र भावीको सम्बन्ध-सेतु खातिर
बलिरह्यो छरी ज्योति मैत्री-दीप समुज्ज्वल ॥

दूतावासभरि गुञ्ज्यो योजना रम्य साँभ्रमा,
चाहना गरियो रेल गुडाउने हिमालमा ।
हेर्न यो सब साकार हुने त्यो भोलिको दिन,
मात्र बाँचुपरेको छ लामो आयु लिईकन ॥



Туда, где ещё не бывали,
Где выбился ветер из сил...
Сто семьдесят лет, как в Непале
Минаев впервые гостил.

Пусть дружба не будет в опале
И полнятся души теплом.
А значит, до встречи в Непале,
До встречи с российским послом!
29 октября 2010



जहाँ कोही सिधै पस्न पाउँदैन थियो अरे,
जहाँ बाहिरको हावा छिर्ने छिद्रै थिएन रे ।
त्यस्तो नेपालमा टेक्न एकपल्ट अचानक
रूसबाट सबैभन्दा पैलहे पुगे मिनाएभ^१ ॥

हाम्रो सम्बन्धमा आँच एक रती पनि नहोस् !
न्यानो मैत्री सधैँ हाम्रो आत्मामा कायमै रहोस् !!
यसैबाट सदा हुन्छ मैत्री-मिलन निश्चित,
होला नेपालमै भेट रूसका दूत^२सङ्ग त !!

(अनुवाद : २९ अक्टोबर २०१०, बुधवार)

- १ मिनाएभ इभान पाभ्लोभिच (सन् १८४०-१८९०) : जन्मबहादुर राणको शासनकाल (सन् १८७५) मा नेपालको यात्राभ्रमण गरी नेपालसम्बन्धी कृति लेख्ने र साहित्यको अनुवाद प्रकाशित गर्ने पहिला रूसी विद्वान्, रूसमा नेपालविद्याका प्रवर्तक प्राच्यविद ।
२ भोर्लिचिक्न सेर्गेइ भासिल्येभिच - नेपालका लागि रूसी राजदूत (नभेम्बर २०१० देखि १४ सेप्टेम्बर २०१५ सम्म) ।



Татьяна ЧЕ (Татьяна Чеглова)

Член Союза писателей России, медалист и обладатель двух наград "Серебряный крест", Заслуженный поэт Подмосковья, Лауреат международных и российских конкурсов, дипломант Всемирной федерации непальской литературы, член Содружества писателей Варны.

РОССИЙСКИЙ ТРИКОЛОР

Я тебе напишу белым цветом по белому,
Чтобы враг не использовал фразу мою :
«Что с тобою, Россеюшка–матушка, сделали?
На каком равновесие держишь краю?»

Истопили тебе, видно, баньку по-черному,
Опустили тебя так, что слез не сдержать!
Я тебе напишу синим цветом по белому,
Чтобы поняли все, что хотела сказать!

Приглянулася ты воронью оголтелому,
Растерзали, да так, что не дать и не взять.
Я тебе напишу, ярко-красным по белому,
То, что верю в тебя, моя Родина–мать!



रूसी तिरड्गा भण्डा

सेतो कागजमा सेतै रङ्गले लेख्छु पत्र म ।
शत्रुले नसकोस् बुझ्न मेरो आशयको क्रम ॥
के मात्र रसिया-माता, भोगेनौ तिमीले, भन !
सन्तुलन अडेको छ देशको जगमा कुन ?

कालो मोसो दले तिम्रो मुहारमा यदाकदा,
कति लुटे तिमीलाई, आँसु भर्दछ सम्झँदा ॥
सेतो कागजमा नीलो रङ्गले लेख्छु पत्र म ।
सकून् बुझुन् सबैले के चाहन्छु भन्न आज म ॥

बथान कागको आई लुछेथ्यो देह काञ्चन,
पीडा असह्य भोग्यौ जो यहाँ बिर्सन सक्तिनँ ॥
सेतो कागजमा रातो रङ्गले लेख्छु पत्र म ।
तिमीमा रसिया-माता, आस्था असीम राख्छु म ॥

(चे २०१५ : ४९)

अनु. ०३.०३.२०१६ (वृहस्पतिवार)



ВОСПОМИНАНИЕ

Вспомнилось утро, утро у моря,
Билось так сердце, с разумом споря.
Солнце вставало лениво меж гор,
Волны шептали любви приговор.

Где же вы, юности дни золотые,
И поцелуи безумно хмельные?
Где те горящие страстью глаза?
Всё унесла лихолетья гроза.

Волны судьбы в вечном жизненном споре,
Нас разлучило безбрежное море.
Всё позабыто, былём поросло,
Время нещадно с собой унесло...



सम्भना

भयो सम्भना बिहानपखको, समुद्रतटमा बिहानको,
विवेकसँग नै विवाद गर्दै मानौँ यसरी मुटु धुक्धुक भो ।
सूर्य उदायो पहाडहरूको कापबाट अल्सी गर्दै,
लहरहरूले गरे फैसला त्यहाँ प्रेमको खुस्खुस गर्दै ।

युवाकालका स्वर्णिम दिन तौ, एक्कासी, खै, कहाँ बिलाए ?
पागलपनको मातसहितका चुम्बन पनि खै, कता हराए ?
कहाँ गए ती प्रेमोन्मादी प्रज्वलित आँखाका जोडी ?
दुर्दिनको आँधीबेरीले लगेछ क्यारे सबै बढारी ?!

जीवनको अविरल सङ्घर्षमाभ्र नियतिको छाल चलेर,
हामीलाई बिछुड गरायो असीम सागर बिघ्न बनेर ।
भयो लीन विस्मृतिमा सारा, टम्म विगतको पर्दा लाग्यो,
आफूसँगै लिएर कुद्दै समय क्रूरतापूर्वक भाग्यो !!

अनु. ०३.०२.२०१८ (शनिश्चरवार)



БЕССМЕРТНЫЙ ПОЛК

Когда настал час роковой,
Взрывали тишь раскаты,
Непробиваемой стеной
Вставали в строй солдаты.
И стар и млад шёл в смертный бой,
Не гнулся перед немцем
И каждый жертвовал собой,
Своим отважным сердцем!

России не сломить народ,
Запомнил враг отныне,
Кто к нам с оружием придёт,
Тот от него и сгинет!
И в майский день звучит салют
В честь каждого солдата,
Герои снова в бой идут
И слышен зов комбата.

Они сегодня с нами тут,
На фото, перед боем,
Портреты правнуки несут,
Чеканя ногу, строим!
По главной площади пройдут
Под звучный марш победы,
Смотрите, вот они идут –
Отцы, сыны и деды!!!



अजम्बरी पलटन

जब संकटको घडी व्याप्त भो,
बमवर्षाले शान्ति भङ्ग भो,
सैनिकहरूको लाम खडा भो -
जब्बर किल्लाको पर्खाल ।
जर्मनसामु भुकेन शिर यो,
गरे सामना डटेर रिपुको,
दृढ भै आहुति गरी प्राणको
लड्न तमिसए बृद्ध र बाल !

रूसी जनता अपराजय छ,
अब दुश्मनले पनि यो बुझ्छ,
यहाँ आउला अस्त्र भिरी जो
चिहान त्यस्को यहीं नै बन्छ !
वसन्तमा जब बढाई हुन्छ,
हर सैनिकप्रति मान गरिन्छ,
सुनिंदा आडर सेनानीको
वीरहरूको ताँती चल्छ ॥

आज यहाँ छन् हामीसँगै ती,
तिन्कै छविको लाग्दछ ताँती,
बोक्छन् तस्वीर नाति-पनाति,
पंक्तिबद्ध भै कदम चलाई ।
मूल चोकतिर जाँदै छन् ती,
विजय धूनसँग बढ्दछ पंक्ति,
लम्किरहेछन्, हेर, सबै ती,
पराक्रमी सब पूर्वज ल्याई !!!



अनु. १०.०२.२०१८ (शनिश्चरवार)

रुसी काव्य-पल्लव / ६५

АВТОРЫ स्रष्टा परिचय

आभ्देएभा ल्युदमिला एभ्नेभ्ना - साहित्यशास्त्री, कवयित्री, नेपालविषयक कवितासंग्रह 'स्नेह र किम्बदन्तीको देश' (सन् २००४) लगायत ३० वटाजति पुस्तकको प्रकाशन, कृष्णप्रकाश श्रेष्ठबाट रूसी भाषामा प्रस्तुत नेपाली साहित्यकार उत्तम कुवरको कृति 'स्रष्टा र साहित्य' (सन् २०१६) को सम्पादनमा सहयोग र रूसी भाषामा विभिन्न संग्रहमा समाविष्ट नेपाली कविताहरूको श्लोकबद्ध अनुवादकर्ता ।

एलिसेएभ इगोर अलेक्सन्द्रोभिच - रूसको दक्षिणी भेकमा अवस्थित दोनवर्ती रोस्तोभ नगरनिवासी कवि, 'रुकोपिस' ('पाण्डुलिपि') साहित्य संकलनका सम्पादक, आदिकवि भानुभक्त आचार्य द्विशतवार्षिक समारोहप्रति समर्पित द्विभाषिक कवितासंग्रह 'स्वर्गद्वारीको पुल' (सन् २०१४) प्रकाशन र रूसी भाषामा विभिन्न संग्रहमा समाविष्ट नेपाली कविताहरूको श्लोकबद्ध अनुवादकर्ता ।

गोलुञ्जिची इभान युर्येभिच - रूस लेखक संघ मास्को नगर संगठनको साप्ताहिक मुखपत्र 'मास्कोभ्स्की लितेरातोर' ('मास्कोको साहित्यकार') का प्रधान सम्पादक, कतिपय कवितासंग्रहको प्रकाशन, महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोत्राको खण्डकाव्य 'मुनामदन' को श्लोकबद्ध अनुवादकर्ता ।

पोत्योम्किना तामारा भिक्तोरोभ्ना - कवयित्री, दर्जनौं कवितासंग्रहहरूको प्रकाशन र विभिन्न संग्रहमा समाविष्ट नेपाली कविताहरूको श्लोकबद्ध अनुवादकर्ता ।

बान्दोरिन अलेक्सेइ भासिल्येभिच - रियाजान नगरका कवि, 'स्मार्त' प्रकाशनालयका संचालक, दर्जनौं कवितासंग्रहको प्रकाशन, विश्व नेपाली साहित्य महासंघबाट प्रकाशित



द्विभाषिक कवितासंग्रह 'नेपाली कविताकुञ्ज' (सन् २०१७) लगायत विभिन्न संग्रहको सम्पादनमा सहयोग ।

बोयारिनोभ भ्लादिमिर गेओर्गिएभिच - रूस लेखक संघ मास्को नगर संगठनका अध्यक्ष, 'क्याङ्कुरुडहरू उडे' कवितासंग्रह लगायत दर्जनौं पुस्तकको प्रकाशन ।

साल्तिकोभा ल्युद्मिला फ्योदोरोभ्ना - रियाजान नगरकी कवयित्री, आदिकवि भानुभक्त आचार्यविषयक द्विभाषिक (नेपाली-रूसी) संकलन 'लोकको गरुँ हित् भनी' (सन् २०१३), लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाको बालकवितासंग्रह 'सुनको विहान' (सन् २०११) मा समाविष्ट र रूसी भाषामा अन्य नेपाली कविताहरूको श्लोकबद्ध अनुवादकर्ता ।

सिल्किन भ्लादिमिर अलेक्सान्द्रोभिच - रूस लेखक संघ मास्को नगर संगठनका उपाध्यक्ष, नेपाल विषयक कविता संग्रह "कामवाण" लगायत विभिन्न संग्रहहरूको प्रकाशन, रूसी भाषामा विभिन्न संग्रहमा समाविष्ट नेपाली कविताहरूको श्लोकबद्ध अनुवादकर्ता ।

चे (चेग्लोभा) ताच्याना लेओनिदोभ्ना - कवयित्री, विभिन्न कवितासंग्रहहरूको प्रकाशन, नेपाली कवि विष्णुबहादुर सिंहको द्विभाषिक कवितासंग्रह 'कविताको रङ' (सन् २०१६) मा समाविष्ट कविताहरू तथा रूसी भाषामा विभिन्न संग्रहमा समाविष्ट नेपाली कविताहरूको श्लोकबद्ध अनुवादकर्ता ।

श्रेष्ठ कृष्णप्रकाश - रूस लेखक संघको सदस्य, विश्व नेपाली साहित्य महासंघको केन्द्रीय सल्लाहकार, 'जगदम्बा-श्री' तथा 'नङ् देरुनीख' लगायत प्रतिष्ठित राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय पुरस्कार, 'साहित्यदूत सगरमाथा - २०१४' लगायत विभिन्न म्नासम्मान एवं पदकहरूद्वारा विभूषित, नेपाली र रूसी भाषामा साहित्य र संस्कृतिविषयक विभिन्न पुस्तकहरूको लेखक, नेपाली भाषामा रूसी साहित्य तथा रूसी भाषामा नेपाली वाङ्मयका कृतिहरूको अनुवादकर्ता ।



विश्व नेपाली साहित्य महासङ्घ
विश्व केन्द्रीय समिति



ЛЕПЕСТКИ РУССКОЙ ПОЭЗИИ (Двуязычный сборник стихов)

रूसी काव्य-पल्लव (द्विभाषिक कविता सङ्कलन)

Авторы: Л.Е.Авдеева, И.А.Елисеев, И.Ю.Голубничий, Т.В.Потёмкина, А.В.Бандорин, В.Г.Бояринов, Л.Ф.Салтыкова, В.А.Силкин, Т.Л.Чеглова.

ग्रन्थ : ल्युदमिला आश्वेएभा, इगोर एलिसेएभ, इभान गोलुबिचि, तामारा पोत्योम्किना, अलेक्सेइ बान्दोरिन, भ्लादिमिर बोयारिनोभ, ल्युदमिला साल्तिकोभा, भ्लादिमिर सिल्किन्, ताच्याना चेलोभा ।

Составитель и автор перевода с русского языка: Кришна Пракаш ШРЕСТХА

सङ्कलन र रूसी भाषाबाट नेपालीमा श्लोकवद्ध अनुवादकर्ता : कृष्णप्रकाश श्रेष्ठ ।

Рецензенты: Вишвас Дип Тигела, СуRENдра Лимбу Парадешि, д-р Лекхнатх Капхле, Савитра Луинтел Гхимире, Кедар Сунувар Санкет.

निर्णोतावृन्द : विश्वासदीप तिगोला, सुरेन्द्र लिम्बू परदेशी, डा. लेखनाथ काफ्ले, सावित्रा लुइँटेल घिमिरे, केदार सुनुवार संकेत ।

Редакторы: Тедж Пракаш Шрестха (непали) и Алексей Бандорин (русский).

सम्पादन : तेजप्रकाश श्रेष्ठ (नेपाली भाषा) र अलेक्सेइ बान्दोरिन (रूसी भाषा) ।

Издание: Всемирный центральный комитет Глобальной федерации непальской литературы.

प्रकाशक : विश्व नेपाली साहित्य महासंघ विश्व केन्द्रीय समिति ।

Координаторы: Глобальная федерация непальской литературы в России, Клуб непалистики России.

संयोजक : विश्व नेपाली साहित्य महासंघ रूस शाखा र रूस नेपालविद्या केन्द्र ।

Компьютерная вёрстка и дизайн: Прамила Прадхан и Саман Шрестха

आवरण/आकृतिविन्यास : रमेश दाहाल, काठमाडौं, ईमेल: ramesh.dahal2074@gmail.com

कम्प्युटर : प्रमिला प्रधान र समन श्रेष्ठ ।

Типография:

मुद्रक : लुष प्रेस, नयाँ बानेश्वर काठमाडौं ।

Москва-Катманду, 2018 г (2075 BC).

मास्को-काठमाडौं, वि.सं. २०७५ (ई.सं.२०१८) ।



द्विभाषिक कवितासङ्ग्रह **रुसी काव्यपल्लवका सष्टावृन्द**
АВТОРЫ СБОРНИКА «ЛЕПЕСТКИ РУССКОЙ ПОЭЗИИ»



Vladimir Bayarinov



Bladimir Silkin



Ivan Golubnichi



Lyudmila Avdeeva



Tamara Potyomkina



Lyudmila Saltikova



Igor Eliseev



Tatiyana Che (Cheglova)



Krishna Prakash Shrestha

ГЛОБАЛЬНАЯ ФЕДЕРАЦИЯ НЕПАЛЬСКОЙ ЛИТЕРАТУРЫ
ВСЕМИРНЫЙ ЦЕНТРАЛЬНЫЙ КОМИТЕТ



विश्व नेपाली साहित्य महासङ्घ